कल्याण की राह

कवि परिचय - हिन्दी में हालावाद के प्रवर्तक कवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन का जन्म 17 नवम्बर सन् 1907 को इलाहाबाद में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा, प्रयाग और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हुई है। आप अनेक वर्षों तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभाग में प्राध्यापक रहे हैं। कुछ वर्षों तक विदेश मंत्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया है। बच्चन जी की प्रथम रचना 'एकांत संगीत' सन् 1934 में प्रकाशित हुई। आपको सर्वाधिक ख्याति तथा लोकप्रियता 'मधुशाला' के प्रकाशन से प्राप्त हुई।

आपने मध्यवर्ग के विक्षुब्ध वेदनाग्रस्त मन को वाणी का वरदान दिया है जिससे मध्यवर्ग और कविता के बीच दूरियाँ समाप्त हुई हैं। समाज की अभावग्रस्त व्यथा, परिवेश का खोखलापन, नियति और व्यवस्था के सम्मुख आम आदमी की बेबसी आपके काव्य के विषय हैं। दृढ़ आत्म-विश्वास, संघर्षशील जीवन और पुनर्निमाण की प्रेरणा बच्चन के काव्य का प्रमुख स्वर है। यह स्वर प्रेम, मस्ती और दीवानगी का है।

बच्चन जी की भाषा सीधी सादी और जीवंत है। भाषा सर्वग्राह्य गेय शैली में संवेदनासिक्त अभिधा के माध्यम से पाठकों से सीधा संवाद करती है। सामान्य बोलचाल की भाषा को काव्य गरिमा प्रदान करने का श्रेय बच्चन को जाता है। आपने अपने काव्य-पाठ से कवि सम्मेलन की परम्परा को सुदृढ़ किया और जनप्रिय बनाया है।

छायावादोत्तर युग के स्वच्छन्दतावादी कवियों में आपका स्थान महत्वपूर्ण है। आपकी प्रमुख रचनाएँ - 'तेरा हार', 'खैयाम की मधुशाला', 'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'निशा निमंत्रण', 'एकांत संगीत', 'आकुल अंतर', 'विकल विश्व', 'सतरंगिनी', 'हलाहल', 'मिलन यामिनी', 'प्रणय पत्रिका' आदि हैं। आत्मकथा लेखन भी आपने किया है। 'क्या भूलूँ क्या याद करुँ' और 'नीड़ का निर्माण फिर' आपकी प्रसिद्ध आत्मकथा हैं।

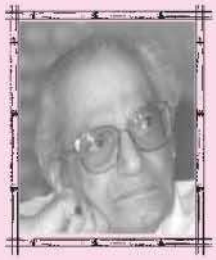

कवि परिचय - आधुनिक हिन्दी कविता के प्रयोगवादी कवि नरेश मेहता का जन्म मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले में सन् 1922 ई. में हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा माधव कॉलेज, उज्जैन एवं बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। आपके व्यक्तित्व में बैष्णव संस्कारों की छाप पड़ी दिखाई देती है। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में आप सक्रिय रहे। आपने आकाशवाणी में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में भी कार्य किया है। आपने ट्रेडयूनियन के लिए एक साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन कार्य किया।

नरेश मेहता नई कविता के कवि हैं। नई कविता में इनकी पहचान 'दूसरा सप्तक' के प्रकाशन पर बनी। आप न तो अपने समय की किसी विचारधारा के कट्टर अनुयायी रहे और न ही किसी फैशन से सम्बद्ध। आपकी कविता तात्विक दृष्टि से आधुनिक है; पर आधुनिकतावादी नहीं। आपकी कविता का उत्स मानवीय प्रेम, करुणा और आनंद है। उसमें कहीं आक्रोश का स्वर नहीं है। वे अपनी कविता में विषयवस्तु का चयन और आकलन अपने मन्तव्य से करते हैं। आपने मिथकीय प्रतीकों और बिम्बों का प्रयोग सर्वथा नई दृष्टि से जीवन मूल्यों को चित्रित करने के लिए किया है।

नरेश मेहता मूलत: कवि और उपन्यासकार हैं। आपकी काव्य कृतियाँ - 'बन पाखी सुनो', 'बोलने दो चीड़ को', 'मेरा समर्पित एकांत उत्सव', 'तुम मेरा मौन हो', 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान' तथा 'शबरी' हैं। आपके उपन्यास 'यह पथ बंधु था' 'धूमकेतु: एक श्रुति', 'नदी यशस्वी है', 'दो एकान्त' और 'डूबते मस्तूल' हैं।

मेहता जी अपने समय के सरल किंतु गंभीर विचारक हैं। आपमें एक अलग नयापन है जो समकालीन अन्य कवियों से आपको बिल्कुल ही अलग करता है।

केन्द्रीय-भाव

व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए व्यक्ति-आचरण को आधार माना जा सकता है। व्यक्ति-आचरण सामजिक मर्यादाओं की सुरक्षा भी करता है और बदलती युग-प्रवृत्तियों के अनुरूप नई सामाजिक मान्यताओं की प्रतिष्ठा करने में भी अपना सहयोग करता है। व्यक्ति के क्रिया-कलाप उसकी चिंतन प्रणाली और उसकी सांस्कृतिक चेतना ही समाज के मूल्यों को निर्धारित करने वाली बनती है। जिस समाज में उच्च मूल्यबोधी जीवन प्रणाली को स्थापित करने वाले व्यक्ति होते हैं, वह समाज ही उदात्त बनता है। व्यक्ति जब ऐसे समाज की संरचना में संलग्न होता है तथा अपने जीवन को इस तरह के ध्येय के निमित समर्पित करता है, तब वह कल्याण के मार्ग को ही प्रशस्त करने वाला होता है।

जीवन का लक्ष्य मात्र व्यक्ति की मुक्ति नहीं बल्कि समूह की मुक्ति से ही जुड़कर - कल्याणमय हो उठता है। हिन्दी साहित्य के सुदीर्घ इतिहास में यह पक्ष सदैव केन्द्रीय बोध की तरह प्रतिष्ठित रहा है। काव्य शास्त्रीय सिद्धान्तों में भी कहा गया है कि काव्य का एक उद्देश्य अकल्याणकारी शक्तियों का विनाश भी है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक काव्य का यह लक्ष्य किसी न किसी रूप में प्रकट होता रहा है।

आधुनिक काल के छायावाद तथा छायावाद के उपरांत की कविता में कल्याण का यह भाव कहीं प्रबोधन के रूप में, कहीं कथावस्तु की रचना में तथा कहीं चरित्रों की संरचना में प्राप्त हो जाता है।

हरिवंशराय बच्चन छायावाद के उपरांत के प्रमुख गीतकार हैं। उन्होंने प्रस्तुत गीत में उद्‌बोधन के माध्यम से जीवन के इस लक्ष्य की ओर संकेत किया है। जीवन का कल्याणमय पथ सतत् सत्कर्म निष्ठा से ही प्राप्त किया जा सकता है। कवि ने स्पष्ट किया है कि जीवन का मर्म समझने के लिए उन व्यक्तित्वों को अपने भीतर उतारना पड़ता है, जिन्होंने इस मार्ग पर अपना संपूर्ण समर्पित कर दिया है। अपने कर्म पर दृढ़ विश्वास रखने वाला व्यक्ति ही पथ की विपदाओं को पार करने में समर्थ होता है।

जीवन की इस राह में स्वप्नों का भी उतना ही महत्व है, जितना सत्य का है। व्यक्ति स्वप्नों के माध्यम से ही जीवन के नए क्षितिजों से जुड़ता है किंतु स्वप्न तभी साकार होते हैं जब उनके साथ कर्म का सत्य जुड़ जाता है। केवल सपने देखते रहने वाले जीवन में सफल नहीं हो पाते हैं। जीवन की समग्रता स्वप्न और कर्म के तालमेल में ही है।

कविता में जीवन के वैविध्य के अनेक प्रसंग प्रस्तुत किए गए हैं। इन्हें प्रस्तुत करने में कवि ने अनेक प्रतीकों का प्रयोग किया है। भाषा प्रवाहमय है।

दूसरी कविता नरेश मेहता द्वारा रचित है। इस कविता में निरंतर कर्मशील बने रहने की ओर संकेत है। सदैव चलते रहो। जीवन में यदि क्रियाशीलता रहती है तो सृजन की नई संभावनाएँ बनती हैं। यह सृजन समाज को उच्च से उच्चतर स्तर प्रदान करता रहता है। सूर्य को प्रतीक मान कर कवि ने कहा है कि अपनी सृजन यात्रा के माध्यम से ही सूरज अंधकार को दूर करता है; धरती को प्रकाश और ऋतुओं को नया शृंगार प्रदान करता है। जो कर्मनिष्ठ होते हैं वे समृद्धि को प्राप्त करते हैं। नदियाँ गतिशील हैं, इसलिए जल का चक्र निर्मित है। गतिहीनता ही मृत्यु है। मानव की संपूर्ण विकास यात्रा उसकी गतिशील कर्मचेतना का ही परिणाम है। जो गतिशील रहेगा वही जीवन का सर्वोत्तम प्राप्त कर पाएगा।

संपूर्ण कविता गतिशील पदावली से समन्वित है। नए और उदात्त बिम्बों की प्रस्तुति से यह कविता जीवन में प्रकाश जागृत करती है।

पथ की पहचान

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(1)

पुस्तकों में है नहीं
छापी गयी इनकी कहानी,
हाल इनका ज्ञात होता
है न औरों की जबानी,

अनगिनत राही गए इस
राह से , उनका पता क्या,

पर गए कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी,

यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी,
पंथ का अनुमान कर ले।

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(2)

यह बुरा है या कि अच्छा,
व्यर्थ दिन इस पर बिताना,
अब असंभव, छोड़ यह पथ
दूसरे पर पग बढ़ाना,

तू इसे अच्छा समझ,
यात्रा सरल इससे बनेगी,

सोच मत केवल तुझे ही
यह पड़ा मन में बिठाना

हर सफल पंथी, यही
विश्वास ले इस पर बढ़ा है।
तू इसी पर आज अपने
चित्त का अवधान कर ले।

पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(3)

है अनिश्चित किस जगह पर
सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित, किस जगह पर
बाग, वन सुन्दर मिलेंगे।

किस जगह यात्रा खतम हो
जाएगी, यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित, कब सुमन, कब
कंटकों के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जाएँगे,
मिलेंगे कौन सहसा
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले।
पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(4)

कौन कहता है कि स्वप्नों
को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें
अपनी उमर, अपने समय में
और तू कर यत्न भी तो
मिल नहीं सकती सफलता,
ये उदय होते, लिए कुछ
ध्येय नयनों के निलय में
किंतु जग के पंथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।
पूर्व चलने के, बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(5)

स्वप्न आता स्वर्ग का; दृग
कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को,
ललकती उन्मुक्त छाती,
रास्ते का एक काँटा
पाँव का दिल चीर देता,
रक्त की दो बूँद गिरती,
एक दुनिया डूब जाती,

आँख में हो स्वर्ग लेकिन
पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी
सीख का सम्मान कर ले।

पूर्व चलने के, बटोही
बाट की पहचान कर ले।

- हरिवंशराय बच्चन
(सतरंगिणी से)

चरैवेति-जन गरबा

चलते चलो, चलते चलो
सूरज के संग-संग चलते चलो, चलते चलो !!
तम के जो बन्दी थे
सूरज ने मुक्त किये
किरनों से गगन पोंछ
धरती को रंग दिये,
सूरज को विजय मिली, ऋतुओं की रात हुई
कह दो इन तारों से चन्दा के संग-संग चलते चलो !!
रत्नमयी वसुधा पर
चलने को चरण दिये
बैठी उस क्षितिज पार
लक्ष्मी, शृंगार किये
आज तुम्हें मुक्ति मिली, कौन तुम्हें दास कहे
स्वामी तुम ऋतुओं के, संवत् के संग-संग चलते चलो !!
नदियों ने चलकर ही
सागर का रूप लिया
मेघों ने चलकर ही
धरती को गर्भ दिया
रुकने का मरण नाम, पीछे सब प्रस्तर है
आगे है देवयान, युग के ही संग-संग चलते चलो !!
मानव जिस ओर गया
नगर बसे, तीर्थ बने
तुमसे है कौन बड़ा
गगन सिंधु मित्र बने
भूमा का भोगो सुख, नदियों का सोम पियो
त्यागो सब जीर्ण बसन, नूतन के संग-संग चलते चलो !!

- नरेश मेहता

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. चलने के पूर्व वटोही को क्या करना चाहिए ?
2. कवि के अनुसार व्यक्ति को किस रास्ते पर चलना चाहिए ?
3. प्रत्येक सफल राहगीर क्या लेकर आगे बढ़ा है ?
4. नरेश मेहता अपनी कविता में किसके साथ चलने की बात कह रहे हैं ?
5. नदियाँ आगे चलकर किस रूप में परिवर्तित हो जाती हैं?
6. कवि ने रुकने को किसका प्रतीक माना है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि स्वप्न पर मुग्ध न होने की राय क्यों देता है ?
2. कवि ने जीवन पथ में क्या-क्या अनिश्चित माना है ?
3. कवि के अनुसार जीवन पथ के यात्री को पथ की पहचान क्यों आवश्यक है ?
4. कवि के अनुसार क्षितिज के उस पार कौन बैठा है और क्यों ?
5. मानव जिस ओर गया, उधर क्या-क्या हुआ ?
6. 'चरैवेति' कविता में कवि ने लोगों को क्या-क्या सलाह दी है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. कवि चलने के पूर्व बटोही को किन-किन बातों के लिए आगाह कर रहा है ?
2. स्वप्न और यथार्थ में संतुलन किस तरह आवश्यक है ? स्पष्ट करें।
3. 'चरैवेति-जन गरबा' कविता का मूल आशय क्या है ?
4. कवि युग के संग-संग चलने की सीख क्यों दे रहा है ?
5. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए -
   (क) 'रास्ते का एक काँटा ..... सीख का अनुमान करलें।'
   (ख) रुकने का मरण नाम ..... संग-संग चलते चलो!!

यह भी समझिए

वक्रोक्ति अलंकार - **''मैं सुकुमारि नाथ वन जोगु ।**
तुमहिं उचित तप, मोकहूँ भोगू॥''

यहाँ रामचन्द्र जी के प्रति सीताजी का सामान्य कथन है कि ''मैं सुकुमारी हूँ और आप वन के योग्य हैं।'' आपको वन जाना चाहिए तथा मुझे घर रहना चाहिए। पर यह सामान्य उक्ति न होकर विशिष्ट या विचित्र उक्ति है। वस्तुत: सीता के कथन से अन्य भाव ध्वनित होता है। अर्थात् सीता इसके विपरीत स्वयं भी वन जाना चाहती हैं। अत:

वक्रोक्ति अलंकार - जहाँ कथित का ध्वनि द्वारा दूसरा अर्थ ग्रहण किया जाए वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

(वक्र+उक्ति=टेढ़ा मेढ़ा कथन या उक्ति की विचित्रता ही वक्रोक्ति का अर्थ है।)

प्रश्न - वक्रोक्ति अलंकार की परिभाषा किसी अन्य उदाहरण सहित समझाइए -

योग्यता विस्तार

1. नरेश मेहता की अन्य दो कविताएँ खोजकर पढ़िए जिसमें जीवन की सीख दी गई हो।
2. शिक्षक की सहायता से जीवन-दर्शन से सम्बन्धित दस कविताओं का एक संकलन कर हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कीजिए।
3. संत कवियों ने व्यक्ति को कल्याण की राह दिखलाई है। अन्य संत कवियों के पदों को खोजकर लिखिए
4. आप विकलांग व्यक्तियों की मदद किस प्रकार करते हैं, कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ

बटोही = राहगीर, पथिक। **बाट** = रास्ता। **सरित** = नदी। **गिरि** = पर्वत, पहाड़। **गह्वर**= गुफा। **वन** = जंगल। **सुमन**=पुष्प, फूल। **शर** = बाण। **जग**=संसार। **पंथ**=रास्ता। **दृग**=आँख। **दीप्ति**=आभा। **पग**=पैर। **उन्मुक्त** = बन्धन रहित। **अनोखी** = विचित्र। विलक्षण।

तम=अंधकार। **गगन**=आकाश। **वसुधा** = पृथ्वी। **सागर** = समुद्र। **मेघ** = बादल। **मरण** = मृत्यु। **भूमा** = पृथ्वी। **जीर्ण** = पुराना। **नूतन**=नया।